

हिन्दी दिवस

नवाचार - अनुभव का संगम

नवाचार पत्रिका सितंबर अंक – 2026

प्रोमिनेंसर्स – जीवन कौशल के साथ सशक्त भविष्य की ओर

हिंदी विभाग के पन्ने पर : “.सितंबर के रंग –सितंबर की चमक : शिक्षक, विद्यार्थी और नवाचार की गाथा” नवोन्मेषी, अनुभव के रंग में

“.सितंबर संगमरमर:-- गौरव, • पुरस्कार वितरण • सामूहिक चित्र , और नई ऊँचाइयाँ”

दूरदर्शी नेतृत्व को मिला प्रतिष्ठित सम्मान



“एक विद्यालय की पहचान उसकी उपलब्धियों से बनती है, और उन उपलब्धियों के पीछे एक दूरदर्शी नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।”

सितंबर माह में Prominence World School के लिए एक अत्यंत गौरवपूर्ण अवसर आया, जब हमारी आदरणीय प्रधानाचार्या, Dr. Mrinalini Ma’am, को Educational Today द्वारा आयोजित North India School Merit Award 2026 में “Unique Classroom” के लिए प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किया गया।

यह सम्मान विद्यालय में एक रचनात्मक, नवाचारपूर्ण एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण वातावरण विकसित करने की दिशा में किए जा रहे निरंतर प्रयासों की महत्वपूर्ण पहचान है। यह उपलब्धि आदरणीय Principal Ma’am के दूरदर्शी नेतृत्व और शिक्षा के प्रति उनके समर्पित दृष्टिकोण को सम्मानित करती है।

उनके मार्गदर्शन में विद्यालय में ऐसी शैक्षिक संस्कृति को प्रोत्साहन दिया जा रहा है, जहाँ विद्यार्थी केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहें, बल्कि सोचें, प्रश्न करें, रचनात्मकता को अपनाएँ और अपने व्यक्तित्व की संभावनाओं को पहचानें।



“सच्चा नेतृत्व वही है, जो स्वयं आगे बढ़ने के साथ-साथ अपने साथ जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को आगे बढ़ने का अवसर और प्रेरणा प्रदान करे।”



यह सम्मान Dr. Mrinalini Ma’am के लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण Prominence World School परिवार के लिए भी गर्व का विषय है। यह उपलब्धि विद्यालय की शैक्षिक यात्रा में एक और महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ती है और भविष्य में उत्कृष्टता की ओर निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

एक सम्मानित नेतृत्व • एक गौरवपूर्ण उपलब्धि • एक उज्ज्वल शैक्षिक दृष्टि

Prominence World School परिवार की ओर से आदरणीय Dr. Mrinalini Ma’am को इस प्रतिष्ठित सम्मान के लिए हार्दिक बधाई एवं सम्मान।

“जहाँ नेतृत्व में दृष्टि, शिक्षा में नवाचार और उद्देश्य में विद्यार्थियों का उज्ज्वल भविष्य हो, वहाँ उपलब्धियाँ स्वयं सम्मान का रूप ले लेती हैं।”

ज्ञान नवाचार और तकनीकी नई उड़ान

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं तकनीकी चिंतन पर जिला/क्षेत्रीय स्तरीय विचार-विमर्श



“जब शिक्षा में नवाचार जुड़ता है, तो सीखने की सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं और संभावनाओं के नए द्वार खुलते हैं।”

सितंबर माह में जागरण पब्लिक स्कूल में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं तकनीकी चिंतन विषय पर जिला स्तरीय विचार-विमर्श का आयोजन किया गया। इस महत्वपूर्ण आयोजन में प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल ने भी उत्साहपूर्वक सहभागिता की और विद्यालय का प्रभावशाली प्रतिनिधित्व किया।

इस अवसर पर हमारी आदरणीय प्रधानाचार्या डॉ. मृणालिनी मैम के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता विषय की शिक्षिकाएँ सुश्री उन्नति एवं सुश्री महिमा ने सहभागिता की। तीनों ने अपने ज्ञान, रचनात्मक सोच, नवाचारपूर्ण दृष्टिकोण एवं प्रभावी प्रस्तुतीकरण के माध्यम से विद्यालय की प्रतिभा और शैक्षिक दृष्टि को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

आयोजन में प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल के उत्कृष्ट प्रदर्शन ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। विद्यालय के शानदार प्रदर्शन के फलस्वरूप क्षेत्रीय स्तर के लिए चयन हुआ। यह उपलब्धि सम्पूर्ण विद्यालय परिवार के लिए गर्व का क्षण रही।

“सफलता किसी एक क्षण का परिणाम नहीं होती; उसके पीछे अनेक समर्पित प्रयासों, निरंतर सीखने और विश्वास की एक पूरी कहानी होती है।”

सम्मान से सजा एक गौरवपूर्ण क्षण

विद्यालय के उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं क्षेत्रीय स्तर के लिए चयन के उपलक्ष्य में नोएडा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा आदरणीय प्रधानाचार्या डॉ. मृणालिनी मैम को सुंदर पौधा भेंट कर सम्मानित किया गया।

यह पौधा उस सम्मान का सुंदर प्रतीक बन गया, जो आज के प्रयासों और आने वाले कल की नई संभावनाओं को जोड़ता है। जिस प्रकार एक पौधा निरंतर देखभाल, धैर्य और समर्पण से वृक्ष बनता है, उसी प्रकार शिक्षा में किए गए छोटे-छोटे प्रयास समय के साथ बड़ी उपलब्धियों का रूप लेते हैं।

“एक पौधा केवल हरियाली का प्रतीक नहीं, बल्कि उस विश्वास का प्रतीक है कि आज बोया गया प्रयास कल एक नई ऊँचाई का रूप लेगा।”



इस उपलब्धि में सुश्री उन्नति एवं सुश्री महिमा का योगदान भी विशेष रूप से सराहनीय रहा। उनके समर्पण, सक्रिय सहभागिता, ज्ञान और निरंतर प्रयासों ने विद्यालय के प्रभावशाली प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रयासों ने विद्यालय को क्षेत्रीय स्तर तक पहुँचने की इस गौरवपूर्ण यात्रा में मजबूत आधार प्रदान किया।

“जब नेतृत्व की दूरदृष्टि, शिक्षकों का समर्पण और विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य का संकल्प एक साथ जुड़ते हैं, तब उपलब्धियाँ केवल सम्मान नहीं रहतीं —वे प्रेरणा बन जाती हैं।”

यह गौरवपूर्ण उपलब्धि प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल की उस निरंतर यात्रा का प्रमाण है, जिसमें शिक्षा के साथ नवाचार, तकनीकी जागरूकता और भविष्य के लिए तैयार करने वाली सोच को विशेष महत्व दिया जा रहा है।

शिक्षक से आगे व्यक्तित्व निर्माण की ओर

Inspire Honours for Teachers

एक उपलब्धि, अनेक प्रयास और एक उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ता विद्यालय।

“एक शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान बाँटना नहीं, बल्कि विद्यार्थी की छिपी हुई प्रतिभाओं को पहचानकर उन्हें निखारना भी है।”

9 सितंबर को Prominence World School के लिए एक और गौरवपूर्ण उपलब्धि जुड़ी, जब IPN Foundation की ओर से आयोजित **Inspire Honours for Teachers** में हमारी शिक्षिका Ms. Anamika Chauhan को **“Non-Scholastic Skill Enhancement of the Year”** के सम्मान से सम्मानित किया गया।

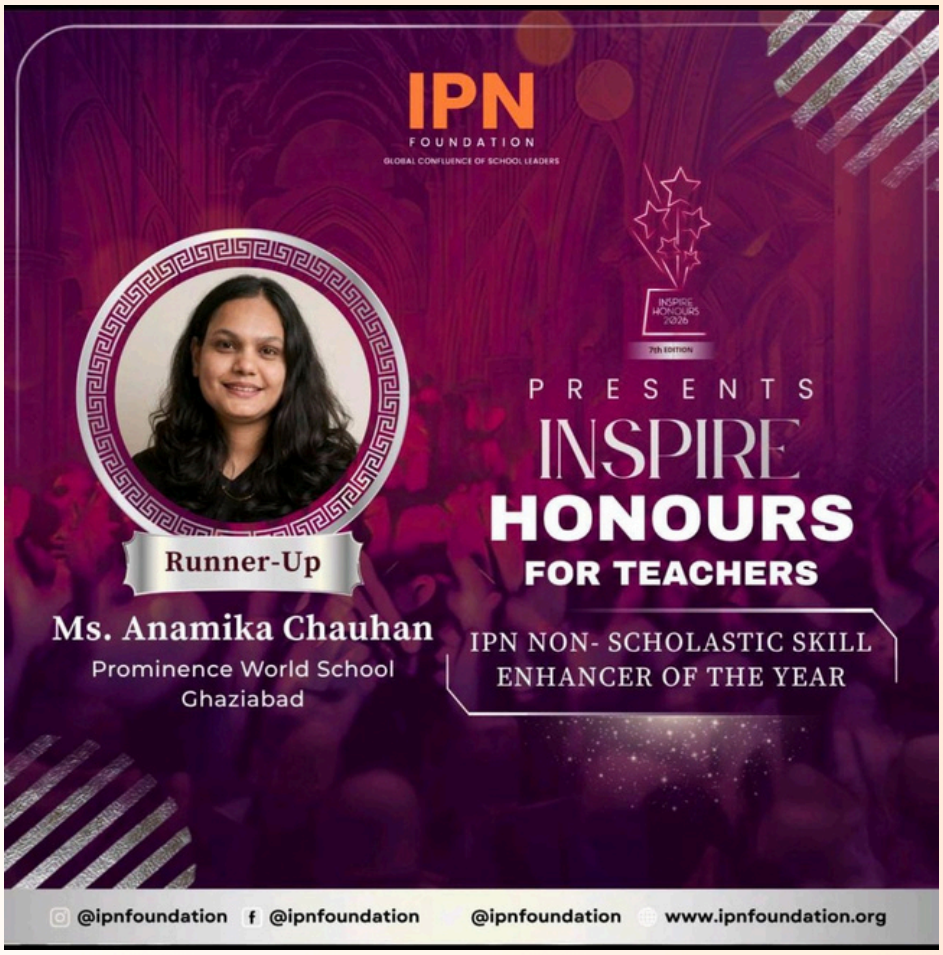

यह सम्मान विद्यार्थियों के **शैक्षणिक विकास के साथ-साथ उनके गैर-शैक्षणिक कौशल, रचनात्मकता, आत्मविश्वास, संचार-कौशल एवं व्यक्तित्व विकास** को प्रोत्साहित करने में उनके योगदान की सराहना है। एक शिक्षक का प्रभाव केवल कक्षा में पढ़ाए गए पाठों तक सीमित नहीं रहता। विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा पहचानने, अपनी बात आत्मविश्वास से रखने, नई गतिविधियों में भाग लेने और अपनी क्षमताओं को विकसित करने के लिए प्रेरित करना भी शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा है।



“विद्यार्थी की हर छोटी उपलब्धि के पीछे किसी शिक्षक का विश्वास, प्रोत्साहन और अनगिनत प्रयास छिपे होते हैं।”

Ms. Anamika Chauhan को प्राप्त यह सम्मान उनके समर्पण और विद्यार्थियों के समग्र विकास के प्रति प्रतिबद्धता का गौरवपूर्ण प्रमाण है। यह उपलब्धि सम्पूर्ण विद्यालय परिवार के लिए प्रेरणादायी है और यह संदेश देती है कि **शिक्षा तब और सार्थक बनती है, जब वह विद्यार्थी के ज्ञान के साथ उसके व्यक्तित्व को भी समृद्ध करे।**

सम्मान एक उपलब्धि है,

पर विद्यार्थियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना उससे भी बड़ी सफलता है।

Prominence World School परिवार की ओर से Ms. Anamika Chauhan को इस प्रतिष्ठित सम्मान के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

गुरु के सम्मान में सजा एक भावपूर्ण दिन

शिक्षक दिवस समारोह | 4 सितंबर



“गुरु के प्रति सम्मान शब्दों में जितना कहा जाए, उतना कम है; क्योंकि गुरु वह दीप हैं, जो स्वयं जलकर जीवन की राह रोशन करते हैं।”

4 सितंबर को प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में पूर्व-प्राथमिक से कक्षा 9 तक के विद्यार्थियों के साथ शिक्षक दिवस का विशेष समारोह हर्षोल्लास और आत्मीयता के साथ मनाया गया। यह दिन केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की ओर से अपने गुरुजनों के प्रति प्रेम, सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करने का सुंदर अवसर बना।

विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के सम्मान में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। गीत, संगीत, नृत्य और कविताओं के माध्यम से बच्चों ने अपने मन की भावनाओं को बेहद खूबसूरती से अभिव्यक्त किया। उनकी प्रस्तुतियों में अपने गुरुजनों के प्रति स्नेह और सम्मान की झलक स्पष्ट दिखाई दी।

समारोह में मनोरंजक खेलों और नृत्य को भी शामिल किया गया, जिसने पूरे वातावरण को उल्लास और उमंग से भर दिया। बच्चों और शिक्षकों की सहभागिता ने इस अवसर को और भी आत्मीय एवं यादगार बना दिया।

विद्यार्थियों द्वारा गुरुजनों के लिए प्रस्तुत की गई कविताएँ, गीत और संगीत की प्रस्तुतियाँ विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं। हर प्रस्तुति में छिपी भावनाएँ मानो यही कह रही थीं कि एक शिक्षक का स्नेह और मार्गदर्शन विद्यार्थी के जीवन में हमेशा एक अमूल्य स्थान रखता है।

“शिक्षक केवल पाठ नहीं पढ़ाते, वे जीवन को समझने की दृष्टि देते हैं; उनकी कही एक छोटी-सी बात भी कभी-कभी पूरी ज़िंदगी की दिशा बदल देती है।”

इस अवसर पर विद्यालय का वातावरण हँसी, संगीत, भावनाओं और गुरुजनों के प्रति सम्मान से भर उठा। विद्यार्थियों ने अपने प्रयासों से यह संदेश दिया कि गुरु का सम्मान किसी एक दिन तक सीमित नहीं, बल्कि उनके प्रति कृतज्ञता जीवनभर बनी रहती है।

“जिस जीवन में गुरु का आशीर्वाद और मार्गदर्शन हो, उस जीवन की राह में उजाला कभी कम नहीं होता।”

शिक्षण के समर्पण को मिला सम्मान



एक सम्मान • एक उपलब्धि • शिक्षा के प्रति समर्पण की पहचान

शिक्षक दिवस पर ‘सर्वश्रेष्ठ शिक्षक’ सम्मान

“एक शिक्षक का सबसे बड़ा सम्मान कोई पुरस्कार नहीं, बल्कि उन विद्यार्थियों की सफलता है, जिनके जीवन को उन्होंने अपने ज्ञान और मार्गदर्शन से दिशा दी हो।”

“सम्मान उस प्रयास का होता है, जो बिना किसी अपेक्षा के प्रतिदिन विद्यार्थियों के भविष्य को बेहतर बनाने में लगाया जाता है।”

सुश्री अंजलि वर्मा की यह उपलब्धि न केवल उनके लिए, बल्कि सम्पूर्ण प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल परिवार के लिए गर्व का विषय है। यह सम्मान विद्यालय के प्रत्येक शिक्षक को अपने कार्य के प्रति और अधिक समर्पण एवं उत्साह के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

“शिक्षक वह शिल्पकार है, जो आज की छोटी-छोटी सीखों से आने वाले कल के व्यक्तित्व को आकार देता है।”

प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल परिवार के लिए यह गौरव का क्षण है कि हमारी शिक्षिका की निष्ठा और समर्पण को एक प्रतिष्ठित मंच पर सम्मान प्राप्त हुआ।

समर्पण को मिली एक नई पहचान

“शिक्षक की मेहनत का सबसे सुंदर परिणाम तब दिखाई देता है, जब उसके प्रयासों को समाज भी पहचानता है और सम्मान देता है।”

19 सितंबर 2026 को प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल की समर्पित शिक्षिका सुश्री सोनम मैम को आईआईटीएम शिक्षक दिवस पुरस्कार 2026 से सम्मानित किया गया।

शिक्षा के प्रति निरंतर समर्पण, विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशीलता और अपने दायित्वों को पूरी निष्ठा से निभाने की भावना ने उनके कार्य को एक विशेष पहचान दी। यह अवसर उनके लिए ही नहीं, बल्कि पूरे विद्यालय परिवार के लिए भी प्रसन्नता का क्षण रहा।

“एक शिक्षक की सच्ची विरासत उसके द्वारा दिए गए ज्ञान में नहीं, बल्कि उन जीवनों में होती है जिन्हें उसने बेहतर बनाने में अपना योगदान दिया।”

सुश्री सोनम मैम की यह उपलब्धि विद्यालय के प्रत्येक शिक्षक के लिए प्रेरणास्रोत है। यह हमें याद दिलाती है कि शिक्षा के क्षेत्र में किया गया ईमानदार प्रयास भले ही प्रतिदिन छोटा दिखाई दे, लेकिन समय के साथ उसका प्रभाव बहुत दूर तक पहुँचता है।



आईआईटीएम शिक्षक दिवस पुरस्कार 2026

“जहाँ सीखने की लौ जलाने वाला शिक्षक अपने कर्तव्य के प्रति सच्चा हो, वहाँ हर उपलब्धि एक नई प्रेरणा बन जाती है।”

सफलता की नई ऊँचाई: हमारे विद्यालय के शिक्षक सीबीएसई सहोदय फाउंडेशन प्रदर्शनी में



"शिक्षा केवल अक्षरों का ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन को गढ़ने की कला है।"

हमारे विद्यालय के लिए यह अत्यंत गर्व और हर्ष का विषय है कि वार्षिक सीबीएसई सहोदय फाउंडेशन (CBSE Sahodaya Foundation) द्वारा आयोजित 'साक्षरता एवं संख्यात्मकता प्रदर्शनी' (Literacy and Numeracy Exhibition) में हमारे विद्यालय के आदरणीय शिक्षक को उनकी उत्कृष्ट कार्यशैली, शिक्षण कौशल और नवाचार के लिए विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

इस भव्य एवं गरिमामयी कार्यक्रम का आयोजन जागरण पब्लिक स्कूल (Jagran Public School) में किया गया, जहाँ क्षेत्र के अनेक प्रतिष्ठित विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षाविदों ने भाग लिया।

प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण एवं उपलब्धि

इस प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य 'मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता' (FLN - Foundational Literacy and Numeracy) को रोचक, व्यावहारिक और प्रभावकारी तरीकों से विद्यार्थियों तक पहुँचाना था।

- नवाचारी शिक्षण मॉडल: हमारे शिक्षक द्वारा प्रस्तुत किए गए टीएलएम (Teaching Learning Material) और गतिविधियों ने निर्णायक मंडल का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया।
- सराहना: खिलौना-आधारित शिक्षण (Toy-based Pedagogy) और खेल-खेल में गणित एवं भाषा सिखाने की उनकी अनूठी तकनीक की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।



"शिक्षक वह दीप है जो स्वयं जलकर दूसरों के मार्ग को रोशन करता है।"

यह उपलब्धि केवल एक व्यक्तिगत सम्मान नहीं है, बल्कि यह हमारे पूरे विद्यालय परिवार की निष्ठा, समर्पण और निरंतर अग्रसर रहने की भावना का प्रतीक है। हमारे शिक्षक की यह सफलता हमारे सभी विद्यार्थियों और सहकर्मियों के लिए एक महान प्रेरणा है।

"जहाँ नवाचार का संगम होता है, वही सफलता का अंकुर फूटता है।"

हम पूरे विद्यालय परिवार, प्रबंधन समिति, प्रधानाचार्य जी एवं समस्त विद्यार्थियों की ओर से आदरणीय शिक्षक को इस शानदार उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की अनंत शुभकामनाएँ देते हैं!

दूध से उत्पाद तक—सीखने की एक जीवंत यात्रा

मदर डेयरी का शैक्षिक भ्रमण | कक्षा 6 से 9(2 सितंबर 2026)

“जब विद्यार्थी किसी प्रक्रिया को केवल पढ़ते नहीं, बल्कि अपनी आँखों से होते हुए देखते हैं, तब ज्ञान अनुभव में बदल जाता है।”



प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल के कक्षा 6 से 9 के विद्यार्थियों के लिए मदर डेयरी का शैक्षिक भ्रमण आयोजित किया गया। इस भ्रमण ने विद्यार्थियों को दूध एवं दुग्ध उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और वितरण की वास्तविक प्रक्रिया को समझने का अवसर प्रदान किया।

विद्यार्थियों ने डेयरी में दूध के संग्रहण, गुणवत्ता जाँच, प्रसंस्करण, पैकेजिंग तथा सुरक्षित वितरण से जुड़ी विभिन्न प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने यह भी समझा कि उपभोक्ताओं तक गुणवत्तापूर्ण उत्पाद पहुँचाने के लिए स्वच्छता, गुणवत्ता और वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का कितना महत्वपूर्ण योगदान होता है।



इस दौरान विद्यार्थियों ने अपनी जिज्ञासाओं को प्रश्नों के माध्यम से व्यक्त किया और दैनिक जीवन में उपयोग होने वाले दुग्ध उत्पादों के पीछे होने वाली व्यवस्थित प्रक्रिया को करीब से समझा। कक्षा में सीखी गई वैज्ञानिक अवधारणाओं को वास्तविक परिस्थितियों से जोड़ने का यह अनुभव उनके लिए विशेष रूप से उपयोगी रहा।

“शिक्षा तब और गहरी हो जाती है, जब किताबों में पढ़ा गया ज्ञान वास्तविक दुनिया में अपनी भूमिका निभाते हुए दिखाई देता है।”

यह शैक्षिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञान, जिज्ञासा और अनुभव से भरा एक यादगार अवसर रहा। इस यात्रा ने उन्हें यह समझने में सहायता की कि किसी भी उत्पाद के हमारे हाथों तक पहुँचने के पीछे विज्ञान, तकनीक, स्वच्छता और अनेक लोगों का निरंतर प्रयास जुड़ा होता है।

“हर अनुभव एक नया पाठ सिखाता है और हर नई खोज सीखने की यात्रा को थोड़ा और समृद्ध बना देती है।”

किताबों से बाहर सीखने का एक स्वादिष्ट अनुभव



बिस्कुट फैक्ट्री का शैक्षिक भ्रमण | 19 सितंबर

जब सीखना कक्षा की चारदीवारी से बाहर निकलता है, तो हर नया अनुभव एक जीवंत पाठ बन जाता है।”

19 सितंबर को प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल के कक्षा 3 से 5 के विद्यार्थियों के लिए बिस्कुट फैक्ट्री का एक रोचक एवं ज्ञानवर्धक शैक्षिक भ्रमण आयोजित किया गया। इस भ्रमण ने बच्चों को पाठ्यपुस्तकों में पढ़ी गई बातों को वास्तविक जीवन की प्रक्रिया से जोड़ने का अवसर दिया।

विद्यार्थियों ने बिस्कुट के निर्माण की प्रक्रिया को नज़दीक से देखा और जाना कि एक साधारण-सा दिखाई देने वाला बिस्कुट तैयार होने के पीछे कितने चरणों, मशीनों और सावधानियों का योगदान होता है। कच्ची सामग्री से लेकर तैयार उत्पाद तक की यात्रा ने बच्चों की जिज्ञासा को और बढ़ाया।

इस दौरान विद्यार्थियों ने स्वच्छता, खाद्य सुरक्षा, पैकेजिंग, मशीनों के उपयोग और व्यवस्थित उत्पादन प्रक्रिया के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। बच्चों ने उत्सुकता के साथ प्रश्न पूछे और अपने अनुभवों को एक-दूसरे के साथ साझा किया।

“सबसे अच्छी सीख वह होती है, जिसे बच्चे अपनी आँखों से देखते हैं, अपने अनुभव से समझते हैं और उत्साह के साथ अपने मन में संजो लेते हैं।”



यह भ्रमण विद्यार्थियों के लिए केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि ज्ञान, जिज्ञासा और आनंद से भरा एक यादगार अनुभव रहा। कक्षा से बाहर मिले इस अनुभव ने बच्चों को यह समझने में मदद की कि हमारे आसपास होने वाली हर प्रक्रिया में सीखने के लिए कुछ न कुछ नया छिपा होता है।

“हर यात्रा हमें किसी नई जगह तक नहीं ले जाती; कुछ यात्राएँ हमें नई समझ तक पहुँचाती हैं।”

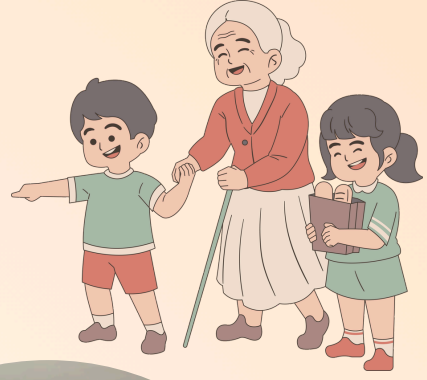

सेवा से सीखा संवेदना का अर्थ

वृद्धाश्रम में सामुदायिक सेवा | 21 सितंबर

“सच्ची शिक्षा वही है, जो हमें केवल ज्ञानवान नहीं, बल्कि संवेदनशील और सहृदय इंसान भी बनाए।”



21 सितंबर को प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल के कक्षा 6 से 9 के विद्यार्थियों ने सामुदायिक सेवा के अंतर्गत वृद्धाश्रम का भ्रमण किया। यह अवसर विद्यार्थियों के लिए सेवा, सम्मान, अपनत्व और मानवीय संवेदनाओं को समझने का एक महत्वपूर्ण अनुभव बना।

विद्यार्थियों ने वहाँ उपस्थित वरिष्ठजनों के साथ समय बिताया, उनसे बातचीत की और उनके अनुभवों एवं जीवन की कहानियों को ध्यानपूर्वक सुना। बच्चों की सहज बातचीत, मुस्कान और आत्मीयता ने इस मुलाकात को भावनात्मक बना दिया।

इस गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों ने जाना कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता हमारी जिम्मेदारी है। किसी के साथ कुछ समय बिताना, उसकी बात सुनना और उसे अपनापन महसूस कराना भी सेवा का एक सुंदर रूप है।



“कभी-कभी किसी के जीवन में खुशियाँ लाने के लिए बड़े प्रयासों की नहीं, बस थोड़े समय, सच्चे अपनत्व और एक मुस्कान की आवश्यकता होती है।”

इस सामुदायिक सेवा ने विद्यार्थियों के भीतर करुणा, सहानुभूति, सम्मान और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को और गहरा किया। उनके लिए यह अनुभव केवल एक गतिविधि नहीं, बल्कि जीवन का ऐसा पाठ रहा, जिसे किसी पुस्तक के पन्नों में पूरी तरह नहीं सीखा जा सकता।

“सेवा हमें यह सिखाती है कि खुशियाँ बाँटने से कम नहीं होतीं, बल्कि और अधिक गहरी हो जाती हैं।”

वृद्धाश्रम से लौटते हुए विद्यार्थियों के साथ केवल एक अनुभव नहीं, बल्कि संवेदनशीलता और मानवीयता की एक अमूल्य सीख भी उनके साथ थी।



गीता के ज्ञान से सजी एक प्रेरणादायी प्रस्तुति



गीता वाचन प्रतियोगिता | 22 सितंबर

“गीता के श्लोक केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाले विचार हैं।”

22 सितंबर को आयोजित गीता वाचन प्रतियोगिता में प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए अपनी प्रभावशाली प्रस्तुति दी। विद्यार्थियों ने श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों एवं वचनों का सुंदर उच्चारण और भावपूर्ण प्रस्तुतीकरण करते हुए भारतीय संस्कृति, संस्कार और जीवन-मूल्यों के प्रति अपनी समझ को अभिव्यक्त किया।

विद्यार्थियों की तैयारी, अनुशासन, आत्मविश्वास और मंच पर प्रस्तुत करने की शैली ने इस आयोजन को विशेष बनाया। उनके प्रयासों में केवल प्रतियोगिता की भावना ही नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान-परंपरा के प्रति सम्मान और उसे समझने की जिज्ञासा भी दिखाई दी।

“जब संस्कारों की जड़ें ज्ञान की मिट्टी में गहरी होती हैं, तब व्यक्तित्व की ऊँचाइयाँ स्वयं दिखाई देने लगती हैं।”

विद्यालय की इस उत्कृष्ट सहभागिता एवं प्रभावशाली प्रदर्शन के लिए संगीत शिक्षक श्री कृष्ण को ट्रॉफी प्रदान



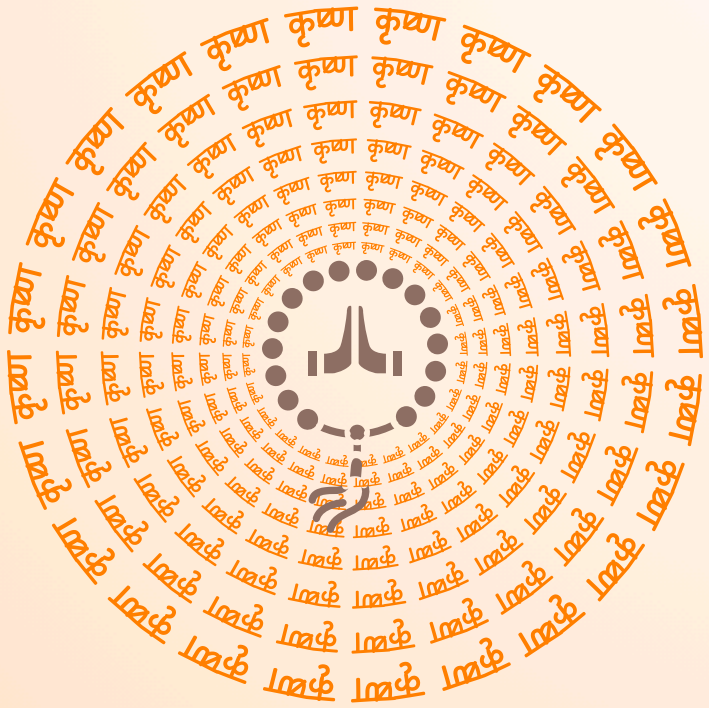

कर सम्मानित किया गया। यह उनके मार्गदर्शन, संगीत एवं विद्यार्थियों की प्रस्तुति को निखारने में दिए गए समर्पित प्रयासों की सराहना का प्रतीक रहा।

“एक शिक्षक की मेहनत मंच पर कुछ मिनटों की प्रस्तुति में दिखाई देती है, लेकिन उसके पीछे तैयारी, धैर्य और विश्वास के अनगिनत क्षण होते हैं।”

गीता वाचन प्रतियोगिता ने विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति और जीवन-दर्शन से जोड़ने के साथ-साथ आत्मविश्वास, उच्चारण, अनुशासन और मंचीय अभिव्यक्ति को विकसित करने का अवसर दिया।

यह केवल एक प्रतियोगिता नहीं थी, बल्कि ज्ञान, संस्कार और भारतीय संस्कृति से जुड़ने का एक सुंदर अनुभव था।

विचारों को मिला मंच, आत्मविश्वास को मिली उड़ान





इंडिया एक्सपो में पैनल चर्चा

“जब विचारों को अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है, तब आत्मविश्वास अपने आप एक नई ऊँचाई छूने लगता है।”

प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल की कक्षा 9 की छात्रा अनन्या त्रिपाठी ने इंडिया एक्सपो में आयोजित पैनल चर्चा में सहभागिता कर विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। इस प्रतिष्ठित मंच पर अनन्या ने आत्मविश्वास के साथ अपने विचार प्रस्तुत किए और चर्चा में सक्रिय भागीदारी निभाई। विभिन्न विचारों और दृष्टिकोणों को सुनते हुए अपनी बात को स्पष्ट एवं प्रभावी ढंग से रखना उनके लिए एक महत्वपूर्ण सीखने का अनुभव रहा।

ऐसे मंच विद्यार्थियों को केवल बोलने का अवसर नहीं देते, बल्कि उन्हें विचारों को समझने, तर्क के साथ अपनी बात रखने, दूसरों के दृष्टिकोण का सम्मान करने और आत्मविश्वासपूर्वक संवाद करने की क्षमता भी प्रदान करते हैं।

“एक विद्यार्थी की आवाज़ में छिपा आत्मविश्वास ही उसके उज्ज्वल भविष्य की पहली पहचान है।”

अनन्या की इस सहभागिता ने यह दर्शाया कि जब विद्यार्थियों को उचित मंच और प्रोत्साहन मिलता है, तो वे अपनी प्रतिभा को विद्यालय की कक्षा से बाहर भी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं।

यह अनुभव अनन्या के लिए केवल एक मंचीय सहभागिता नहीं, बल्कि सीखने, संवाद करने और स्वयं को अभिव्यक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा।



हिंदी : शब्दों से आगे, हमारी पहचान तक



हिंदी दिवस विशेष समारोह | 23 सितंबर

“हिंदी केवल एक भाषा नहीं, यह भारत की संवेदना, संस्कृति, संस्कार और आत्मीयता को एक सूत्र में बाँधने वाली अभिव्यक्ति है।”



हिंदी दिवस प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है, किंतु विद्यालय में चल रही अर्धवार्षिक परीक्षाओं के कारण इस वर्ष हिंदी दिवस का विशेष आयोजन 23 सितंबर को किया गया। इस अवसर पर कक्षा 7 और 8 के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत विशेष प्रार्थना सभा ने हिंदी भाषा की गरिमा, विविधता और सौंदर्य से पूरे विद्यालय को भाव-विभोर कर दिया।

यह विशेष सभा केवल एक कार्यक्रम नहीं थी, बल्कि हिंदी के प्रति प्रेम और सम्मान को मंच पर जीवंत करने का एक सुंदर प्रयास थी। सभा का संचालन सुश्री झा द्वारा किया गया, जबकि कक्षा 7 की सफिया एवं कक्षा 8 के दिव्यांश ने प्रभावशाली ढंग से मंच संचालन की जिम्मेदारी निभाई।

सुरों में बसी हिंदी की आत्मा



कार्यक्रम में सफिया ने “पायो जी मैंने राम रतन धन पायो” की भावपूर्ण प्रस्तुति देकर वातावरण को भक्तिरस से भर दिया। उनकी मधुर प्रस्तुति ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया और हिंदी की भक्ति-काव्य परंपरा की आत्मीय अनुभूति कराई।

कक्षा 8 के हर्ष एवं योगेश्वर ने सुंदर दोहा-वाचन प्रस्तुत किया, वहीं कक्षा 7 की दृष्टि ने प्रभावशाली सुविचार के माध्यम से हिंदी के महत्व को सामने रखा।



सभा में हिंदी एवं राष्ट्रीय प्रतिज्ञा का भी हिंदी में वाचन किया गया। कक्षा 8 के हर्ष ने हिंदी दिवस से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्यों के माध्यम से विद्यार्थियों को हिंदी के इतिहास और महत्व से परिचित कराया ।

कक्षा 8 के आराध्य एवं आद्या ने हिंदी दिवस पर आधारित कविता का सुंदर गायन प्रस्तुत कर कार्यक्रम में साहित्य और संगीत का मधुर रंग भर दिया।

इन सभी प्रस्तुतियों ने मिलकर सभा को ज्ञान, साहित्य, संगीत, संस्कार और अभिव्यक्ति का एक सुंदर संगम बना दिया।

“जिस भाषा में हमारी पहली लोरी गूँजती है, जिसमें माँ की ममता सुनाई देती है और जिसमें हमारी भावनाएँ सहज होकर शब्द बनती हैं—उस भाषा का सम्मान करना अपनी जड़ों का सम्मान करना है।”

प्रधानाचार्या का प्रेरणादायी संदेश

कार्यक्रम के समापन पर आदरणीय प्रधानाचार्या डॉ. मृणालिनी मैम ने अपने प्रेरणादायी संदेश के माध्यम से विद्यार्थियों को हिंदी के प्रति सम्मान, उसके समृद्ध साहित्य से जुड़ने और दैनिक जीवन में हिंदी के सुंदर एवं सार्थक प्रयोग के लिए प्रेरित किया। उनके शब्दों ने विद्यार्थियों को यह समझने की प्रेरणा दी कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सोच और संस्कारों का भी प्रतिबिंब है।

कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन भी आदरणीय प्रधानाचार्या के मार्गदर्शन एवं आशीर्वचन के साथ संपन्न हुआ।





“भाषाएँ अनेक हो सकती हैं, पर अपनी भाषा से जुड़ा भाव सदैव हृदय के सबसे निकट रहता है।”

हिंदी दिवस का यह आयोजन विद्यार्थियों की प्रतिभा को मंच देने के साथ-साथ उन्हें अपनी भाषायी और सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने वाला अनुभव रहा। इस दिन विद्यालय में हिंदी केवल बोली नहीं गई—उसे गाया गया, सुनाया गया, महसूस किया गया और पूरे सम्मान के साथ जिया गया।

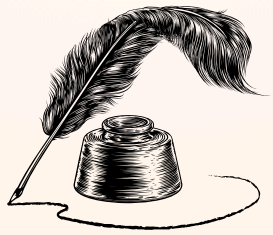



हिंदी हमारी आवाज़ है, हमारी विरासत है, हमारी पहचान है।

“हिंदी को केवल एक दिन मनाने की भाषा नहीं, बल्कि हर दिन जीने की भाषा बनाना ही उसके प्रति सच्चा सम्मान है।”

हिंदी परिषद

शब्दों से सृजन की ओर



““हर बच्चे के भीतर एक कहानी होती है, कोई कविता होती है, कोई अनकहा भाव होता है—
आवश्यकता केवल उसे शब्द देने की होती है।”

विद्यार्थी साहित्यिक एवं सृजनात्मक नेतृत्व दल
(Student Literary & Creative Leadership Team)
“जहाँ विद्यार्थी केवल रचनाएँ नहीं रचते, बल्कि शब्दों, विचारों और सृजनात्मकता का नेतृत्व करते हैं।”
हिंदी परिषद — Student Literary Leadership Team
क्रम. विद्यार्थी (Designation)



1 दिव्यांश जोशी , मुख्य छात्र संयोजक — Chief Student Coordinator



2 हर्ष सह-छात्र संयोजक — Vice Student Coordinator



3 Ridham Adhana
साहित्य संपादक — Literary Editor



4 Manvendra
रचनात्मक संपादक — Creative Editor



5 Yogeswar
कविता एवं कहानी प्रमुख — Poetry & Story Lead



6 Aasmi
वक्तृत्व एवं अभिव्यक्ति प्रमुख — Oratory & Expression Lead



7 Aditi
कला एवं डिज़ाइन प्रमुख — Art & Design Lead



8 Safiya Jha
नवाचार प्रतिनिधि — Navachar Representative

इस वर्ष प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में पहली बार हिंदी परिषद के गठन की एक नई और रचनात्मक पहल की गई। यह परिषद केवल विद्यार्थियों का एक समूह नहीं, बल्कि हिंदी भाषा, साहित्य और सृजनात्मक अभिव्यक्ति को विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचाने का एक प्रयास है।
इस अभिनव पहल की संकल्पना एवं रचनात्मक रूपरेखा सुश्री झा द्वारा तैयार की गई, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों की साहित्यिक प्रतिभा को एक सशक्त और रचनात्मक मंच प्रदान करना है।
हिंदी परिषद का उद्देश्य विद्यार्थियों में पठन, लेखन, कविता, कहानी, वक्तृत्व और रचनात्मक अभिव्यक्ति के प्रति रुचि विकसित करना है, ताकि वे अपनी कल्पनाओं और भावनाओं को सुंदर शब्दों का रूप दे सकें।

जहाँ शब्द सपनों को आवाज़ देते हैं

हिंदी परिषद के माध्यम से विद्यार्थी अपने स्वरचित लेख, कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण, विचार और रचनात्मक प्रस्तुतियाँ साझा करेंगे। उनकी रचनाओं को विद्यालय पत्रिका 'नवाचार' के माध्यम से मंच प्रदान किया जाएगा, ताकि कक्षा की सीमाओं से निकलकर उनकी कल्पना और प्रतिभा व्यापक पाठक-वर्ग तक पहुँच सके।

यह पहल विद्यार्थियों को केवल अच्छा लिखना नहीं सिखाएगी, बल्कि उन्हें सोचना, महसूस करना, प्रश्न करना और अपनी बात प्रभावी ढंग से कहना भी सिखाएगी।

"शब्द छोटे होते हैं, पर उनमें एक पूरी दुनिया बस सकती है; एक विद्यार्थी का लिखा हुआ पहला वाक्य भी उसके भीतर छिपे लेखक की पहली दस्तक हो सकता है।"

नवोदित लेखकों की पहली उड़ान

'नवाचार' के आगामी पृष्ठों में हिंदी परिषद के विद्यार्थियों की कविताएँ, कहानियाँ, लेख और मौलिक रचनाएँ स्थान पाएँगी। यह उनके लिए केवल प्रकाशित होने का अवसर नहीं, बल्कि अपनी आवाज़ को पहचानने और अपनी सृजनात्मक क्षमता पर विश्वास करने की शुरुआत होगी।

आज जो बच्चा दो पंक्तियाँ लिख रहा है, संभव है कल वही शब्दों से किसी के जीवन को दिशा दे।

आज जो छोटी-सी कहानी लिखी जा रही है, संभव है कल वही किसी बड़े सपने की शुरुआत बने।

हमारी भाषा, हमारी जिम्मेदारी

हिंदी परिषद का संकल्प केवल हिंदी को पढ़ाना नहीं, बल्कि हिंदी के प्रति प्रेम, सम्मान और आत्मीयता जगाना है। क्योंकि कोई भी भाषा तभी जीवित रहती है, जब अगली पीढ़ी उसे केवल विषय के रूप में नहीं, बल्कि अपनी अभिव्यक्ति के रूप में अपनाती है।

"भाषा विरासत में मिल सकती है, लेकिन उसे जीवित रखना हर पीढ़ी की जिम्मेदारी है।"

इसी विश्वास के साथ हिंदी परिषद अपनी पहली यात्रा आरंभ कर रही है—

कुछ शब्दों से, कुछ भावनाओं से, कुछ सपनों से और अनगिनत रचनात्मक संभावनाओं के साथ।

हिंदी हमारे अतीत की विरासत ही नहीं,
हमारे वर्तमान की अभिव्यक्ति और भविष्य की आवाज़ भी है।
आइए, शब्दों को केवल लिखें नहीं—उन्हें महसूस करें।
कहानियों को केवल पढ़ें नहीं—उन्हें जिएँ।
कविताओं को केवल सुनें नहीं—उन्हें हृदय में उतरने दें।
और हिंदी को केवल भाषा न मानें—उसे अपनी पहचान का हिस्सा बनाएँ।

जहाँ शब्दों का सम्मान होता है, वहाँ विचार जन्म लेते हैं;

जहाँ विचारों को पंख मिलते हैं, वहाँ नई पीढ़ी इतिहास लिखती है।”

शब्द-सृजन — नवोदित रचनाकारों की अभिव्यक्ति

कहानी:-

1.एक छोटे से गाँव में सोहन नाम का एक गरीब लकड़हारा रहता था। वह रोज जंगल जाकर सूखी लकड़ियाँ काटता और उन्हें बाज़ार में बेचकर अपना पेट भरता था। एक दिन नदी के किनारे एक पेड़ से लकड़ी काटते समय अचानक उसकी लोहे की कुल्हाड़ी हाथ से छूटकर गहरे पानी में गिर गई।
कुल्हाड़ी पानी में डूब गई और सोहन नदी के किनारे बैठकर रोने लगा, क्योंकि उसके पास दूसरी कुल्हाड़ी खरीदने के पैसे नहीं थे।
उसकी लाचारी देखकर नदी के जल-देवता प्रकट हुए। उन्होंने सोहन से रोने का कारण पूछा। सोहन ने उदास होकर अपनी कुल्हाड़ी पानी में गिरने की बात बताई।
जल-देवता ने नदी में गोता लगाया और एक सोने की कुल्हाड़ी निकालकर लाए। उन्होंने पूछा, "क्या यह तुम्हारी कुल्हाड़ी है?"
सोहन ने ईमानदारी से कहा, "नहीं, यह मेरी नहीं है।"
जल-देवता ने दोबारा गोता लगाया और इस बार चांदी की कुल्हाड़ी निकाली।
सोहन ने फिर सिर हिलाकर कहा, "नहीं देव, यह भी मेरी नहीं है।"
तीसरी बार जल-देवता ने पानी से वही पुरानी लोहे की कुल्हाड़ी निकाली। सोहन अपनी कुल्हाड़ी देखकर खुशी से झूम उठा और बोला, "हाँ! यही मेरी कुल्हाड़ी है।"
सोहन की इस निश्छल ईमानदारी से जल-देवता बेहद प्रसन्न हुए। उन्होंने लोहे की कुल्हाड़ी के साथ-साथ सोने और चांदी की भी कुल्हाड़ी भेंट कर दी।सोहन की ईमानदारी ने उसकी गरीबी हमेशा हमेशा के लिए दूर कर दी।
ईमानदारी ही सबसे उत्तम नीति है

2. तथ्य, विचार :-

नेपाल एक सुंदर पहाड़ी देश है। ये देश अपनी संस्कृति,पहाड़,अच्छे लोग और मौसम के लिए जाना जाता है।नेपाल के इसी मौसम की वजह से यहां हर साल हजारों लोग घूमने आते है वैसे तो इस मौसम की वजह से नेपाल में टूरिस्ट आता है लेकिन कभी कभी ये मौसम नेपाल के लिए बुरा सपना भी बन जाता है। इस साल भी नेपाल ने कुछ ऐसा ही देखा जिसको वह कभी नहीं भूला सकेंगे।
नेपाल में हिमालय से काफी सारी नदियां आती है जो कि नेपाल की दिनचर्या का
सहारा होती है परन्तु इस साल एक नदी (लहेंडे खोला) जो कि नेपाल के त्रिशूली बेसिन में आकर मिलती है उसका रास्ता एक ग्लेशियर ने रोक लिया था, ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नेपाल बारिश के मौसम में अक्सर लैंडस्लाइड होती रहती हुआ परन्तु इस बार इसकी वजह से हिमालय से आती हुई एक नदी का पानी रुक गया जिसकी वजह से एक जगह पे काफी ज्यादा पानी इक्ट्ठा होना शुरू हो गया और एक समय बाद ग्लेशियर पिघल गया और सारा पानी बहुत तेजी से नेपाल की तरफ आता गया और जो रास्ते में सबकुछ खत्म करता गया। कई सारे लोगों के घर डूब गए, कई सारे लोगों की दुकान डूब गई,कई सारे लोगों की गाड़ियां डूब गई।
इस बाढ़ की वजह से पूरे नेपाल में कई सारे लोगों की मृत्यु हुई और इसकी चर्चा पूरे दुनिया में चली।
नेपाल को बचाने के लिए सबसे पहले भारत ने अपनी सेना भेजी। इस बाढ़ का असर सिर्फ नेपाल में नहीं भारत में भी दिखा। भारत कवि बिहार जैसे राज्य में भीषण बाढ़ आई।
यह घटना इस बात की संकेत है की कहानी प्रकृति के साथ चलना चाहिए अगर हम प्रकृति को खत्म करते रहेंगे तो प्रकृति एक दिन हमें खत्म कर सकती है।

हर्ष ,क्लास 8. क्रमांक 7

3.माँ का कर्ज़ और तिरंगा (कहानी)

बर्फ़ की चादर में लिपटा द्रास का वह मोर्चा किसी रेगिस्तान से कम नहीं था—जहाँ हवा भी सांसों को ज़माने की ताक़त रखती थी। उस सुनसान बर्फ़ीली चोटी पर तैनात थे मेजर विक्रम और उनकी टुकड़ी।

गाँव में विक्रम की बूढ़ी माँ अकेली रहती थीं। दो दिन पहले ही उनका पत्र आया था—"बेटा, इस दिवाली घर आओगे न? तेरी पसंदीदा गुझिया बनाकर रखूँगी।" विक्रम ने पत्र जेब में सीने के पास रख लिया था, जैसे माँ की गर्माहट वहीं सिमट आई हो।

रात के तीन बजे अचानक अंधाधुंध गोलाबारी शुरू हो गई। दुश्मन चोटी पर कब्ज़ा करने के इरादे से आगे बढ़ रहा था। हमला अचानक था और दुश्मन की संख्या सैनिकों से चार गुना अधिक।

सन्नाटा चीख उठा। विक्रम की टुकड़ी के दो जवान तुरंत वीरगति को प्राप्त हो गए। गोलियों की तड़तड़ाहट और तोपों के धमाकों से आसमान गूंज उठा। हालात बेहद नाजुक थे—अगर वह चोटी दुश्मन के हाथ लग जाती, तो पूरा वैली कट जाता।

पीछे हटने का हुक्म आ सकता था, लेकिन मेजर विक्रम की आँखों में पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था। उन्होंने अपनी टुकड़ी की तरफ़ देखा। बची-खुची गोलियाँ, ख़ून से लथपथ वर्दी और जवानों की आँखों में दहकती हुई आग।

विक्रम ने गर्जना की, "जवानों! आज मिट्टी हमसे हमारी वफ़ादारी का हिसाब मांग रही है। जब तक शरीर में आख़िरी साँस और बंदूक में आख़िरी गोली है, दुश्मन एक कदम भी आगे नहीं बढ़ेगा!"

और फिर शुरू हुआ वीरता का वह नज़ारा, जिसे देखकर काल भी काँप उठे।

विक्रम आगे बढ़े। एक गोली उनके कंधे को चीरती हुई निकल गई, पर उन्होंने परवाह नहीं की। ख़ून बर्फ़ पर लाल स्याही की तरह बिखर रहा था। उन्होंने अकेले ही दुश्मन के दो बंकरों को ग्रेनेड से उड़ा दिया। जब बंदूक की गोलियाँ ख़त्म हो गईं, तो जवान आमने-सामने की भिड़ंत में उतर आए। 'भारत माता की जय' और 'हर हर महादेव' के नारों से वह बर्फ़ीली घाटी गूंज उठी।

सुबह की पहली किरण जब द्रास की चोटियों पर पड़ी, तो भारतीय तिरंगा चोटी पर शान से लहरा रहा था। दुश्मन मैदान छोड़कर भाग चुका था। चोटी सुरक्षित थी।

लेकिन उस चोटी पर शांति छा चुकी थी। मेजर विक्रम बर्फ़ पर सीधे लेटे हुए थे, आँखों में आसमान की नीली रंगत और होंठों पर एक हल्की सी मुस्कान थी। उनकी जेब से निकला माँ का वह पत्र ख़ून से तर हो चुका था, लेकिन तिरंगा उनके सीने पर पूरी आन-बान-शान के साथ ढका हुआ था।

कुछ दिनों बाद गाँव में जब विक्रम का पार्थिव शरीर तिरंगे में लिपटकर पहुँचा, तो पूरा गाँव रो पड़ा।

विक्रम की बूढ़ी माँ के पास जब अफ़सर पहुँचे, तो उनकी आँखों से आँसू तो बह रहे थे, लेकिन उनकी पीठ सीधी थी। उन्होंने कांपते हाथों से बेटे के माथे को चूमा, तिरंगे को स्पर्श किया और अफ़सर से कहा:

"रोऊँगी नहीं साहब... मेरा बेटा भागे हुए कायर की तरह नहीं आया। उसने अपनी माँ की गुझिया से ज़्यादा भारत माता के कर्ज़ को बड़ा माना। मुझे दुख है कि मेरा एक ही बेटा था... काश! मेरे दो बेटे होते, तो दूसरे को भी सरहद पर भेज देती।"

माँ के इन शब्दों ने वहाँ खड़े हर जवान और गाँव वाले का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया। रोते हुए हाथों ने भी विक्रम की शहादत को सलामी दी।

शहीद विक्रम चले गए थे, लेकिन वे अपने पीछे एक ऐसी गाथा छोड़ गए, जो भारत माँ के हर लाल को तिरंगे से प्यार करना सिखाती है।

सीख (Moral of the Story) :- देश और तिरंगे की रक्षा से बड़ा कोई धर्म नहीं होता। सच्चा वीर वही है जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपना फ़र्ज़ निभाता है, और सच्ची देशभक्ति वह है जो व्यक्तिगत रिश्तों से ऊपर उठकर राष्ट्र को सर्वोपरि मानती है।

यह कहानी हमें सिखाती है कि हमारे सैनिकों का त्याग और उनके परिवारों का साहस ही हमारी आज़ादी और सुरक्षा की असली नींव है।

दिव्यांश जोशी, कक्षा- 8

झरोखा

नन्हे - नन्हे छात्रों का झरोखा :----
हिंदी विभाग के पन्ने पर : “सितंबर के रंग –
सितंबर की चमक : बालमन की गाथा ‘नवाचार’ , ‘नवोन्मेषी के रंग में,’



















Chief Editor :-Ms.Jha

Designing : - Ms Mahima